



# लोकविज्ञान

विज्ञान समिति, उदयपुर

नवम्बर 2016

## गणित : जीवन का आधार

गणित को जीवन का आधार कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बाल्यकाल से गिनती और पहाड़ों की गणना से प्रारंभ हो कर जीवन के संध्याकाल तक दैनिक व्यवहार का ज्ञान कराने तक गणित अपना आधिपत्य सिद्ध करती है। सत्य असत्य की पहचान, निर्णय लेने की क्षमता गणित ज्ञान के बिना असंभव ही है। विश्व में कोई भी विधा, कोई भी विज्ञान गणित ज्ञान के बिना शरीर बिन आत्मा जैसा है। अभियांत्रिक क्षेत्र में से भी यदि गणित के हिस्से हटा दिये जाएं तो पृथ्वी से वायुयान नीचे गिर पड़ेंगे, रेल रुक जाएगी, कम्प्यूटर डिब्बों का काम करने लगेंगे, समाचार तंत्र शून्य तंत्र बन जाएगा। जीवन मृत प्रायः प्रतीत होगा।

इंजीनियरिंग और गणित को यदि एक सिक्के के दो पहलू कहे तो सत्य होगा। आज विज्ञान की जो प्रगति हुई है और हो रही है वो विज्ञान में गणित के अनछुए हिस्सों को गणित से जोड़ने या गणित की सहायता से उन्नत से उन्नत संसाधन उत्पन्न करने से हो रही है। जीवन की वो विधाएं जो गणित पर आधारित नहीं थी वो मानवीय युक्तियों व संयोजन पर बाध्य थी। जीवन की इन विधाओं को गणित की सीमाओं में लाते ही इनके विज्ञान में अप्रत्याशित उन्नति हुई। उदाहरण के तौर पर फोटोग्राफिक कैमरे को फोकस करना, अलग-अलग तरह के कपड़ों को धोने के लिए एक साथ वाशिंग मशीन में डाल कर नियंत्रित करना, वातानुकूलित यंत्र को मानवीय सुविधा और सुख के अनुरूप उपयोग करना, जली हुई फोटोग्राफिक फिल्म से फोटो उतारना, व्यक्ति के हटने के बाद उसका फोटो खींच कर चित्र उतारना, अंधेरे में देखने वाले चश्मे का उपयोग आदि असंख्य क्षेत्रों में इस तकनीकी और ज्ञान का पांव पसारना। इस विधा को हम आज न्यूरल नेटवर्किंग, फजी सिस्टम, आर्टिफिशल इंटेलिजेंस आदि नामों से जानते हैं।

फजी सिस्टम की खोज के साथ ही विज्ञान और अभियांत्रिकी क्षेत्र यांत्रिकी आधार के स्थान पर प्राकृतिक आधार की ओर बढ़ने लगा। प्रकृति के जीवित उदाहरणों को अपना कर विज्ञान के हर क्षेत्र में क्षमता का उत्तरोत्तर विकास होने लगा। कम ऊर्जा स्रोतों को खोज निकालने की दौड़ शुरू हो गई। पनडुब्बियों को नाभिकीय ऊर्जा के स्थान पर मछली के

आचार व्यवहार पर आधारित पनडुब्बियों का निर्माण, पारंपरिक वायुयान के स्थान पर पक्षियों के गुणों पर आधारित वायुयान, जल-वायु और गैस विद्युत उत्पादन के स्थान पर सूर्य ऊर्जा को प्रमुख ऊर्जा स्रोत बनाने की खोजने की यात्रा मानव की प्रकृति की सत्ता को अंततः मन से स्वीकारोक्ति है।

खगोल विज्ञान और ज्योतिर्विज्ञान की आत्मा तो सिर्फ गणित ही है। हमें पता ही नहीं चलता कि हमारे प्रतिदिन के अनेक जीवन कार्य गणित पर कितने आधारित हैं। मौसम हो या त्यौहार बिना गणित ये दृष्टिगोचर ही नहीं होंगे। मकर संक्रांति के अतिरिक्त हिंदुओं का कोई दूसरा त्यौहार ऐसा नहीं है जिसके लिए कोई एक तारीख (अंग्रेजी कैलेंडर की) निश्चित हो। मकर संक्रांति के अतिरिक्त किसी भी धर्म में ऐसी निश्चित तिथि वाला पर्व ज्ञात नहीं होता। कभी दीपावली अक्टूबर में आती है तो कभी नवंबर में। होली कभी 17 मार्च की तो कभी 25 मार्च को।

वैज्ञानिक दृष्टि से मकर संक्रांति सूर्य के हिसाब से पड़ती है जबकि अन्य त्यौहार चंद्रमा के अनुसार मनाए जाते हैं और सूर्य की गति तथा चन्द्रगति में अंतर स्पष्ट है। नक्षत्र वर्ष यानि नक्षत्र के हिसाब से एक वर्ष लगभग 365 दिनों का होता है। चौथाई दिन जुड़ते जुड़ते 4 वर्षों में एक दिन और बढ़ जाता है, जिसे लीप वर्ष कहते हैं। जबकि चन्द्रमा 29 दिन 12 घण्टे 44 मिनट 02.9 सैकेण्ड में पृथ्वी की एक परिक्रमा कर लेता है।

गणित को विज्ञान की जननी कहा जाता है तथापि गणित केवल गणित बन कर रह गई। गणित, गणित विज्ञान या गणित अभियांत्रिकी न बन पाई। गणितज्ञों ने अपनी खोजों को संक्षिप्त परिधि में विराम दे दिया, उसकी विस्तृत उपयोगिता नहीं दर्शाई। गणित के अनगिनत आयामों की उपयोगिता, एप्लीकेशन, खोज का अध्ययन करके अन्य व्यक्ति तो अभियंता, वैज्ञानिक बन कर देश में प्रतिष्ठित हो गए परंतु मूलतः गणितज्ञ वो स्थान न पा सके।

—दीपक चतुर्वेदी

विशेषज्ञ परामर्शदः डॉ. के.पी. तलेसरा, डॉ. महीप भटनागर, डॉ. शैल गुप्ता, डॉ. विभा भटनागर सम्पादक : प्रकाश तातेड़

विज्ञान समिति, रोड़ नं. 17, अशोकनगर, उदयपुर - 313 001 दूरभाष : 0294-2413117, 2411650

Website : [www.vigyansamitiudaipur.org](http://www.vigyansamitiudaipur.org), E-mail : [samitivigyan@gmail.com](mailto:samitivigyan@gmail.com)

## पेयजल:समस्या एवं समाधान

हमारी पृथ्वी के 70 % भाग पर समुद्र हैं जिसका पानी खारा व पीने लायक नहीं होता है। 30 % भाग में तालाबों, बांधों, जलाशयों, नदियों, कुओं, पोखरों आदि का पानी पीने के लिए काम में लिया जाता है। हमारे देश में नदियों को पवित्र माना जाता है, उदाहरण के तौर पर गंगा का पानी जिसकी स्वच्छता कितनी है हम भली-भाँति जानते हैं। नदी के घाट पर पवित्र स्नान किया जाता है, पानी में फूल व मृत व्यक्ति की राख बहाई जाती है। म.प्र. में शिप्रा नदी, प्रयाग में बहने वाली गंगा नदी पर महाकुम्भ मेलों में लाखों लोग स्नान करते हैं, ऐसे में पानी कैसे स्वच्छ रह सकता है व पीने लायक माना जा सकता है।

पानी का रासायनिक सूत्र  $H_2O$  है। पानी के एक अणु में दो परमाणु हाइड्रोजन व एक परमाणु ऑक्सीजन का होता है। सामान्य पानी की यही संरचना है किन्तु जब पानी में अशुद्धि तत्व या अन्य रसायन मिल जाते हैं तो वह प्रदूषित होकर पीने लायक नहीं रहता है। देश में औद्योगिक विकास के साथ-साथ वातावरण दूषित हुआ है। वातावरण में वाहनों के बढ़ते धुएँ व तेल के उपयोग के कारण इतना प्रदूषण बढ़ गया है कि वायु में सांस लेना भी दुष्कर हो गया है। दूषित वातावरण व अशुद्ध पानी के कारण अनेक प्रकार की बीमारियाँ पैदा हो रही हैं।

शुद्ध, स्वच्छ, हल्का छना हुआ पानी, जो शरीर के तापक्रम के अनुकूल हो जन साधारण के पीने योग्य होता है। गंदे पानी को किसी भी विधि द्वारा शुद्ध कर पीने लायक बनाना चाहिए। पीने का पानी रोगाणुओं एवं जीवाणुओं रहित होना चाहिए। शुद्ध जल में भी निश्चित समय पश्चात् सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति हो जाती है। बहुत समय तक संगृहीत, अनछना बोतलों और पाउचों में बंद पुराने पानी में भी जीवाणु उत्पन्न हो जाते हैं तथा वह पीने लायक नहीं रहता है। वर्तमान में सामाजिक समारोहों में अधिकतर इसी प्रकार की जल व्यवस्था रहती है।

पीने योग्य पानी क्षारीय प्रकृति का हो तो स्वास्थ्य के लिये लाभप्रद होता है। पानी के पीने योग्य होने की दूसरी महत्वपूर्ण आवश्यकता उसके अम्ल-क्षार के अनुपात की होती है जिसे वैज्ञानिक या जलप्रदाय विभाग pH गुण के आधार पर मापते हैं। पानी का pH जब 7 होता है तो उसमें अम्ल एवं क्षार तत्व बराबर मात्रा में होते हैं। ची का मान 7 से कम होता है तो पानी अम्लीय तथा 7 से अधिक होने पर क्षारीय गुणों वाला होता है। स्नायु एवं मज्जा के पोषण हेतु शरीर में

अम्ल तत्व की मात्रा बहुत कम होनी चाहिए। रक्त में अम्ल अधिक होने पर वह विषाक्त बन कर उनके रोगों का कारण बन जाता है। हमारे शरीर में गुदों का मुख्य कार्य अम्ल की अधिकता को बाहर निकाल कर अम्ल एवं क्षार में सन्तुलन बनाना है। शरीर में क्षार तत्व की कमी के कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने लगती है तथा हड्डियाँ कमजोर होने लगती हैं। अम्लपित्त (Acidity), गैस, जोड़ों में दर्द एवं कब्ज जैसे रोगों की सम्भावना बढ़ जाती है। शरीर का सारा तंत्र अनियन्त्रित होने लगता है व शरीर रोगों का घर बनने लगता है।

डॉ. शेरी रोजर्स, डॉ. इंगफ्रेड हॉवर्ड, टोकियो जापान की जल संस्था के निदेशक डॉ. हिडेमित्सु हयासी, डॉ. डेविड कारपेन्टर, डॉ. मुशीक जोन, डॉ. विलियम केली, डॉ. नीताबेन गोस्वामी, डॉ. जयेश भाई पटेल, जमशेदपुर के वैज्ञानिक डॉ. जीवराज जी जैन आदि शोध विशेषज्ञों के अनुसार क्षारीय पानी नियमित पीते रहने से समय से पूर्व वृद्धावस्था के लक्षण प्रकट नहीं होते हैं। हड्डियों का घनत्व बढ़ता है तथा अम्लपित्त, जोड़ों का दर्द जैसे रोगों की संभावनाएँ अपेक्षाकृत कम हो जाती हैं। हमारे भोजन में 20% अम्लीय व 80 % क्षारीय पदार्थ होने चाहिए। वर्तमान में चटपटा, फास्टफूड, अम्लीय पदार्थों का सेवन अधिक होता है जिससे अम्लीयता, गैस, बदहजमी जैसे रोग हो जाते हैं। शरीर में अम्ल की अतिरिक्त मात्रा को दूर करने के लिये नियमित क्षारीय पानी पीना सबसे सरल, सहज, सस्ता, दुष्प्रभावों रहित, विकल्प है।

### शुद्ध पानी कैसे प्राप्त करें :

आज घरों में शुद्ध पानी पीने के लिये ट्यूब एवं न्पट्ट जैसे विकल्पों का उपयोग किया जा रहा है। पानी को चुम्बक, पिरामिड, रत्नों, धातुओं, धूप की किरणों से रंगीन बोतलों में रख कर विभिन्न रंगों की किरणों से उसे स्वास्थ्यवर्धक एवं दवा के रूप में तैयार किया जा सकता है, परन्तु ये विधियाँ जनसाधारण के लिये व्यावहारिक नहीं हैं। आयुर्वेदिक पद्धति में विविध प्रकार की भस्मों का उपयोग होता आ रहा है। राजा-महाराजा तथा धनाढ्य लोग इनका उपयोग करते आये हैं। एक आसान तरीका जो जैन मुनि स्वच्छ पानी प्राप्त करने हेतु अपनाते हैं कि स्वच्छ पानी में गाय के गोबर की राख सही अनुपात में मिलाकर शुद्ध शक्तिवर्धक रोगनाशक पीने का पानी प्रत्येक घर में उपलब्ध हो सकता है राख मिश्रित पानी पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

संक्रामक रोगों से बचाव होता है। पानी के अन्दर उत्पन्न बैक्टीरिया समाप्त हो जाते हैं। शरीर में रक्त कणों की संख्या में वृद्धि होती है। मधुमेह, यकृत, गुर्दे व अन्य रोगों में जल्दी राहत मिलती है। क्षारीय पानी हेतु गाय के गोबर की राख मिश्रित पानी शुद्ध पानी का अच्छा विकल्प है। जैन धर्मावलम्बी इसे धोवन पानी कहते हैं।

पानी में राख मिलाने से उसमें क्षारीय गुण आ जाते हैं तथा पानी में 8-10 घण्टों तक जीव उत्पन्न नहीं होते हैं। पानी के विभिन्न नमूनों की वैज्ञानिकों द्वारा जांच करने पर इस बात की पुष्टि हुई है कि ऐसे पानी की स्वास्थ्यवर्धक गुणवत्ता एवं ऊर्जा अन्य सभी प्रकार के पानी से अधिक होती है। रासायनिक विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि गोबर राख मिश्रित पानी का pH प्रायः 8 से अधिक होता है। ऐसा पानी पीने से विचारों में भी अपेक्षाकृत अधिक सात्विकता रहती है।

R.O. व एक्वागार्ड से प्राप्त पानी में कई प्रकार के धातुओं की कमी हो जाती है जिनकी शरीर को आवश्यकता होती है, साथ ही उपयोगी पानी मात्र 20% रह जाता है, शेष पानी अनुपयोगी हो जाता है। R.O. का पानी पीने वाले व्यक्ति आसानी से अन्य पानी को नहीं पी सकते हैं, उनकी प्रतिरोधक क्षमता घटने लगती है। पानी उबालकर भी स्वच्छ किया जा सकता है किन्तु 8-10 घण्टे रखने पर उसमें पुनः जीवाणु उत्पन्न हो जाते हैं।

-डॉ. बी.एल. चावत

## स्वास्थ्य - 2025 : कुछ सम्भावनाएं

सभी डॉक्टरों का चाहे वे सरकारी हो या गैरसरकारी, यह दायित्व हो कि वे घायल की जान बचाने के लिए उसे तुरन्त डॉक्टरी सहायता दे और कानूनी औपचारिकताओं की प्रतीक्षा न करें। गम्भीर घायल व्यक्ति को समय से चिकित्सा उपचार न देना उसके जीने के अधिकार का अतिक्रमण है।

सरकारी डॉक्टर अधिकार की मांग करते हैं। सही है, लेकिन अधिकार का स्रोत कर्तव्य है। यदि हम सब अपने कर्तव्यों का पालन करें, तो अधिकारों को खोजने हमें दूर नहीं जाना पड़ेगा।

- हाल के दशकों में दवाओं में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, पर जीवन की खतरनाक समस्याएं अभी भी मौजूद हैं। एंटीबायोटिक रेजिस्टेन्स मुँह फाड़े खड़ी है। कैंसर की दर बढ़ रही है, पर नई इम्यूनो थेरेपी ड्रग्स काफी प्रभावी साबित हो रही है।

सन् 2015 में पूर्व अमरीकी राष्ट्रपति ने घोषणा की थी वह कैंसर फ्री हो गये हैं। नई इम्यूनो थेरेपी ड्रग्स ने उनके शरीर से मेटास्टेटिक स्किन कैंसर सेल्स का सफाया कर दिया। जीन एडिटिंग से कुछ बीमारियों से छुटकारा मिलेगा और एक दिन नये जीव बनाये जा सकेंगे। इसी तरह 3-डी-प्रिंटिंग से हेल्थकेयर इंडस्ट्री के लिए दवाएँ व ऐप्लीकेशन बनाना आसान हो गया है। रोबोटिक सर्जरी से छोटे व माइक्रोटेक्नीक्स - इंटरवेशन आसान हो गया है। इसमें रोबोटिक बीरियाट्रिक सर्जरी सफलता के झंडे गाड़ रही है।

-डॉ. आई.एल. जैन

## प्रतिभावान युवा वैज्ञानिक

● अमरीका के ओहियो में रहने वाली भारतीय मूल की मानसा मेंडू की उम्र लगभग 13 साल, कक्षा नौवीं और उपलब्धि अमरीका की टॉप यंग साइंटिस्ट। मेंडू ने सिर्फ 5 डॉलर के खर्च से बिजली बनाने वाली डिवाइस तैयार कर 25 हजार डॉलर का इनाम जीता है। उन्होंने इस साल के यंग साइंटिस्ट चैलेंज के फाइनल राउंड में एक पीजोइलेक्ट्रिक विंड एनर्जी डिवाइस बनाकर अपनी जगह बनायी थी।

उन्होंने 2016 के डिस्कवरी एजुकेशन 3 एम यंग साइंटिस्ट चैलेंज में पहला स्थान हासिल किया। मेंडू द्वारा बनाई हुई डिवाइस हवा और धूप से बिजली बना सकती है। मेंडू ने कहा कि उन्हें यह मशीन बनाने की प्रेरणा पेरेंट्स के साथ भारत भ्रमण के दौरान मिली। भारत में बिजली की अव्यवस्था देखकर ही उन्होंने एक सस्ते बजट वाली बिजली पैदा करने की डिवाइस बनाने का फैसला लिया।

● मनिपाल से इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने वाले कोटा के 26 साल के श्रेयांस मेहता आज की तारीख में चार कंपनियों के फाउंडर या कोफाउंडर हैं, लेकिन एक वक्त ऐसा था, जब राजस्थान के एक छोटे शहर झालावाड़ से कोटा आकर पांचवे दर्जे में एडमिशन लेने वाले श्रेयांस के सामने अंग्रेजी में फेल होने की नौबत आ गई थी।

श्रेयांस के लिए बिजनेस का कोई विकल्प नहीं था, पर वह देश की शिक्षा व्यवस्था के लिए कुछ करना चाहते थे, इसलिए अपने कॉलेज के दूसरे ही साल में ही उन्होंने प्रैक्टिकल लर्निंग स्टार्टअप की 'ज्ञान लैब' के रूप में शुरुआत की। इसे अमरीका के टेक्सॉस शहर में हुए 'डेल एजुकेशन चैलेंज' में दुनिया का द्वितीय श्रेष्ठ कांसेप्ट के तौर पर चुना गया। साथ ही एक लाख डॉलर की पुरस्कार राशि भी दी गई।

## वृद्धावस्था का रोग : डिमेंशिया

डिमेंशिया : संक्षेप में कहें तो डिमेंशिया किसी विशेष बीमारी का नाम नहीं, बल्कि एक बड़े से लक्षणों के समूह का नाम है (संलक्षण, syndrome)। डिमेंशिया को कुछ लोग “भूलने की बीमारी” कहते हैं, परन्तु डिमेंशिया सिर्फ भूलने का दूसरा नाम नहीं है, इसके अन्य भी कई लक्षण - नयी बातें याद करने में दिक्कत, तर्क न समझ पाना, लोगों से मेल-जोल करने में झिझकना, सामान्य काम न कर पाना, अपनी भावनाओं को संभालने में मुश्किल, व्यक्तित्व में बदलाव, इत्यादि। यह सभी लक्षण मस्तिष्क की हानि के कारण होते हैं, और जिंदगी के हर पहलू में दिक्कतें पैदा करते हैं।

डिमेंशिया के लक्षण अनेक रोगों की वजह से पैदा हो सकते हैं, जैसे कि अल्जाइमर रोग, लुई बाडिज़ वाला डिमेंशिया, वास्कुलर डिमेंशिया (नाड़ी सम्बंधित/संवहनी मनोभ्रंश), फ्रंटोटेम्पोरल डिमेंशिया, पार्किन्सन, इत्यादि।

लक्षणों के कुछ उदाहरण: हाल में हुई घटना को भूल जाना, बातचीत करने समय सही शब्द याद न आना, बैंक की स्टेटमेंट न समझ पाना, भीड़ में या दुकान में सामान खरीदते समय घबरा जाना, नए मोबाईल के बटन न समझ पाना, जरूरी निर्णय न ले पाना, लोगों और साधारण वस्तुओं को न पहचान पाना, वगैरह। रोगियों का व्यवहार अकसर काफी बदल जाता है। कई डिमेंशिया वाले व्यक्ति ज्यादा शक करने लगते हैं, और आसपास के लोगों पर चोरी करने का, मारने का, या भूखा रखने का आरोप लगाते हैं। कुछ व्यक्ति अधिक उत्तेजित रहने लगते हैं, कुछ अन्य व्यक्ति लोगों से मिलना बंद कर देते हैं और दिन भर चुपचाप बैठे रहते हैं। कुछ व्यक्ति अश्लील हरकतें भी करने लगते हैं।

डिमेंशिया से पीड़ित व्यक्ति यह सोच कर अपनी समस्याओं को छुपाते हैं कि या उन्हें पागल समझा जाएगा या लोग हसेंगे कि क्या छोटी सी बात लेकर डॉक्टर के पास जाना चाहते हैं। परिवार वाले इन लक्षणों को बुढ़ापे का नतीजा समझ कर नकार देते हैं। वे यह नहीं सोचते कि सलाह पाने से स्थिति में सुधार हो सकता है।

डिमेंशिया की वजह से व्यक्ति के सोचने-करने की क्षमता पर बहुत असर होता है, और परिवार वालों को देखभाल के तरीके उसके अनुसार बदलने होते हैं। व्यक्ति से बातचीत करने का, उसकी सहायता करने का, और उसके उत्तेजित या उदासीन मूड को संभालने का तरीका बदलना होता है। समय के साथ रोग के कारण मस्तिष्क में बहुत अधिक हानि हो जाती है, और व्यक्ति ज्यादा निर्भर होते जाते हैं।

डिमेंशिया सिर्फ बुढ़ापे में ही नहीं, पहले भी हो सकता है (जैसे कि 30, 40 या 50 साल में): कई लोग सोचते हैं कि डिमेंशिया बुढ़ापे की बीमारी है, और सिर्फ बुजुर्गों में पायी जाती है, पर कुछ प्रकार के डिमेंशिया जल्दी शुरू हो सकते हैं। WHO (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइज़ेशन) का अनुमान है कि 65 साल से कम उम्र में होने वाले डिमेंशिया (जिसे young onset या early onset कहते हैं) अकसर पहचाने नहीं जाते और ऐसे केस शायद 6 से 9 प्रतिशत हैं।

रोगियों और परिवार की खुशहाली के लिए उचित देखभाल बहुत जरूरी है। फिलहाल, अधिकांश डिमेंशिया में दवाई की भूमिका बहुत सीमित है। न तो दवाई मस्तिष्क को दोबारा ठीक कर सकती है, न ही बीमारी को बढ़ने से रोक सकती है, सिर्फ कुछ केस में दवाई लक्षणों से कुछ राहत पहुंचा पाती है।

वेबसाइट, डिमेंशिया केयर नोट्स, हिंदी (<http://dementiahindi.com>) पर डिमेंशिया की देखभाल के लिए जानकारी, संसाधन, सलाह, सुझाव और अनेक परिवारों की कहानियाँ हैं, जिससे डिमेंशिया से ग्रस्त व्यक्ति की देखभाल करने वाले डिमेंशिया के रोग को समझ पाएँ, और व्यक्ति की देखभाल कैसे करें, यह सोच पाएँ।

विश्व भर में डिमेंशिया की पहचान पिछले कुछ दशक में ज्यादा अच्छी तरह से हुई है, और अब डॉक्टरों का मानना है कि यह लक्षण उम्र बढ़ने का साधारण अंग नहीं हैं। जो रोग डिमेंशिया का कारण हैं, उन पर शोध हो रहा है ताकि बचाव और इलाज के तरीके ढूँढे जा सकें।

स्रोत- इंटरनेट

पाठकों से निवेदन है कि -

- लोक विज्ञान के अंक पर अपने अभिमत से अवगत कर इसके विकास में सहयोग करें।
- लोकविज्ञान में प्रकाशनार्थ आपकी रचनाएं सादर आमंत्रित है।